

Id sibi propositum habentes S. 58. *οὐ γνοῦσα λέγω, ἀλλὰ στοχασαμένη *Non dico deliberatione praemissa, quomodo fraus tēgi possit, sed temere atque audacter* S. 19.

Στοχαστική ψυχή *Mens sagax* S. 18.

Στρατεύειν ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα *Suscipere expeditionem aduersus Graeciam: bello perere Graeciam* S. 39.

Στρατηγικοὶ [οἱ] *Rei imperatoriae periti: praetores* S. 10.

Στρατηγός *Dux belli: imperator* S. 68. *στρατηγοὶ *Praetores* S. 10.

Στρεβλιῦσθαι *Torqueri: cruciari* S. 28.

Στρέφειν τοῖς λόγοις ἄνω καὶ κάτω *Sermonem modo huc modo illuc vertere* S. 66.

Στρώματα *Stragula* S. 73.

Σὺ additur verbis, vt σὺ λέγεις S. 1. οἷε σὺ S. 2. σὺ ἔρου S. 3. add. S. 6. 7. etcc. *Ponitur sine verbo, vt σὺ τοῦτου δημιουργός sc. εἶ S. 7. ὀρθῶς καὶ λέγων σὺ S. 6. v. not. *σοὶ *In tuam utilitatem usumque* S. 7. v. ad Secl. 16. not. *σοὶ redundat, vt τοῦναντίον δὴ οὗτός σοι — ἐνδείκνυται S. 47. ἔστιν σοι τοῦτο — οὕτως S. 65. *Omittitur, vt νομίσας, ὦ Γοργία, ἐρωτᾶσθαι S. 7. νόμιζε τοίνυν καὶ παρ' ἐμοῦ χρῆναι S. 37. int. σε.

Συρφετός δούλων καὶ παντοδαπῶν ἀνθρώπων μηδενὸς ἀξίων *Colluies seruorum et varii generis hominum vilissimorum* S. 44. Sic συρφετός et κομψός opponuntur sibi inuicem *Hipp. mai. p. 20.*

Συχνός· συχνῶ ὕστερον χρόνῳ *Multo post* S. 74. *συχνοὶ *Plurimi: pars maxima* S. 10. συχνούς τείνω τῶν λόγων *Nimis longus fui* S. 75.

Σφάλλῃσθαι *Errare: a veritate aberrare* S. 16. ibidem et additur ἐν τοῖς λόγοις. id. qu. ἀμαρτάνειν. *de Rep. 5. p. 6. Vol. VII. additur τῆς ἀληθείας.*

Σφάττειν *Necare* S. 24. id. qu. ἀποκτινύναι.

Σφόδρα *Vehementer. Additur Verbis* S. 32. 52. 81. et *Adiectiuus*, vt σφόδρα πονηροὶ ἄνθρωποι *Homines admodum improbi: homines pessimi* S. 81. *Σφόδρα γε S. 50. 51. affirmant